STUDYHUB.NET.IN

मेवाड़ का गुहिल वंश — Part 1

इतिहास, उत्पत्ति के मत, बप्पा रावल, अल्लट एवं जैत्रसिंह का प्रामाणिक विश्लेषण

1. मेवाड़ — परिचय एवं भौगोलिक पहचान

मेवाड़ राजस्थान के इतिहास में सर्वाधिक गौरवशाली, संघर्षशील और स्वाभिमानी क्षेत्र के रूप में प्रतिष्ठित है। वर्तमान उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़ एवं प्रतापगढ़ सहित उनके निकटवर्ती भूभाग को संयुक्त रूप से 'मेवाड़' के नाम से जाना जाता है।

मेवाड़ के प्राचीन नाम — परीक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण

प्राचीन नाम	विशेष विवरण
शिवि	सबसे प्राचीन नाम — शिवि जनपद (महाभारत काल)
प्राग्वाट	प्राचीन साहित्यिक ग्रंथों में उल्लिखित
मेद्पाट	मेर/मेद् जनजाति के आधिपत्य के कारण मेद्पाट कहलाया
मेवाड़	मेद्पाट का अपभ्रंश → वर्तमान प्रचलित नाम

💡 **परीक्षा ट्रिक:** मेवाड़ के 3 प्राचीन नाम — "शि-प्रा-मेद" = शिवि + प्राग्वाट + मेद्पाट। यह ट्रिक अक्सर 1 MCQ बचाती है!

मेद्पाट नाम की उत्पत्ति: यह माना जाता है कि इस प्रदेश पर प्रारंभ में मेर अथवा मेद् नामक जनजाति का आधिपत्य था। इसी जनजाति के नाम पर यह क्षेत्र मेद्पाट कहलाया, और कालांतर में इसका अपभ्रंश 'मेवाड़' हो गया।

ऐतिहासिक स्रोत: रावल समरसिंह के शासनकाल की चित्तौड़ प्रशस्ति से गुहिल वंश की विभिन्न शाखाओं के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

🔍 2. गुहिलों की उत्पत्ति — इतिहासकारों के विभिन्न मत

गुहिल वंश की उत्पत्ति को लेकर इतिहासकारों में पर्याप्त मतभेद हैं। इस विषय पर विभिन्न विद्वानों के मत निम्नलिखित हैं:

इतिहासकारों के मतों की तुलनात्मक सारणी

इतिहासकार/स्रोत	मत (गुहिलों की उत्पत्ति)	मुख्य आधार
अबुल फजल (मुगलकालीन)	ईरान के बादशाह नौशेरवां आदिल के वंशज	फारसी तवारीखें
डी. आर. भण्डारकर	ब्राह्मण वंश से उत्पत्ति	पुरालेखीय / Epigraphical साक्ष्य
डॉ. गोपीनाथ शर्मा	ब्राह्मण वंश से उत्पत्ति	भण्डारकर के मत का समर्थन
मुहणोत नैणसी	मूलतः ब्राह्मण, बाद में क्षत्रिय बने	लेखन में दोहरा मत
डॉ. गौरीशंकर ओझा	विशुद्ध सूर्यवंशी क्षत्रिय	विस्तृत शोध एवं प्राचीन शिलालेख
कर्नल जेम्स टॉड	विदेशी मूल (वल्लभी की घटना)	जैन ग्रंथ + फारसी तवारीख

💡 **परीक्षा बिंदु:** RAS परीक्षाओं में "गुहिलों को सूर्यवंशी क्षत्रिय किसने माना?" पूछा जाता है — उत्तर: **डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा**।

📖 कर्नल टॉड का वल्लभी सिद्धांत

कर्नल जेम्स टॉड ने जैन ग्रंथों के आधार पर गुहिल वंश की उत्पत्ति के संबंध में एक विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है:

- 524 ई. में गुजरात स्थित वल्लभी पर विदेशी आक्रांताओं ने आक्रमण किया।
- उस समय वल्लभी के शासक शिलादित्य की गर्भवती रानी पुष्पावती सिरोही में अम्बा भवानी की तीर्थयात्रा पर थीं।
- रानी पुष्पावती इस विनाश से बच निकलीं और एक गुफा में उन्होंने एक बालक को जन्म दिया।
- गुफा में जन्म होने के कारण वह बालक **गोह, गुहिल अथवा गुहदर** कहलाया।
- इसी गुहिल ने मेवाड़ में गुहिल राजवंश की मौलिक नींव रखी।

⚠️ परीक्षा सावधानी: यह टॉड का मत है और इसे ऐतिहासिक रूप से काल्पनिक भी माना जाता है। परीक्षा में "टॉड के अनुसार" पूछा जाए तो यही उत्तर देना है।

👑 3. गुहिल वंश के संस्थापक

भूमिका	व्यक्ति	विवरण
वंश के मूल संस्थापक	गुहिल	गुफा में जन्मे — वंश का नाम इन्हीं पर पड़ा
साम्राज्य के वास्तविक संस्थापक	बप्पा रावल (कालभोज)	728-753 ई. में साम्राज्य विस्तार किया

💡 **परीक्षा ट्रिक:** "गुहिल = वंश का नाम; बप्पा रावल = साम्राज्य का संस्थापक" — दोनों में अंतर याद रखें।

⚔️ 4. बप्पा रावल (728–753 ई.) — मेवाड़ साम्राज्य के वास्तविक संस्थापक

बप्पा रावल मेवाड़ के इतिहास का वह सूर्य हैं जिनकी चमक सदियों बाद भी फीकी नहीं पड़ी। उनका असली नाम, उनकी उपाधियाँ, उनके विजय अभियान और उनके धार्मिक योगदान — सभी परीक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

📋 बप्पा रावल — मूल परिचय

वास्तविक / मूल नाम	कालभोज
उपाधि	बप्पा रावल (हारीत ऋषि द्वारा प्रदत्त)
शासनकाल	728–753 ई.
गुरु / सम्प्रदाय	हारीत ऋषि / पाशुपत सम्प्रदाय
आराध्य देव / राजधानी	एकलिंगजी / नागदा
महत्वपूर्ण विजय	मौर्य शासक मान मोरी को पराजित किया (734 ई.)

🏆 बप्पा रावल की विजय एवं उपलब्धियाँ

(i) मौर्य शासक मान मोरी को पराजित करना (734 ई.): बप्पा रावल ने 734 ई. में तत्कालीन मौर्य शासक मान मोरी को पराजित कर चित्तौड़ पर अपनी सत्ता स्थापित की। कविराजा श्यामलदास ने अपने ग्रंथ 'वीर विनोद' में भी बप्पा द्वारा मौर्यों से चित्तौड़ दुर्ग छीनने का समय 734 ई. ही बताया है।

(ii) धारण की गई उपाधियाँ: चित्तौड़ पर अधिकार के पश्चात बप्पा ने तीन महत्वपूर्ण उपाधियाँ धारण कीं:

- **हिन्दू सूर्य:** हिन्दू धर्म के रक्षक के रूप में।
- **राजगुरु:** धार्मिक और राजनीतिक सर्वोच्चता दर्शाने हेतु।
- **चक्कवै (चक्रवर्ती):** सार्वभौमिक सम्राट की उपाधि।

🪙 बप्पा रावल के सिक्के — महत्वपूर्ण परीक्षा बिंदु

बप्पा के शासनकाल के तांबे एवं स्वर्ण सिक्के प्राप्त हुए हैं:

- **स्वर्ण सिक्के का वजन:** 119 ग्रेन (119 Grain)।
- **सिक्कों पर अंकित चिह्न:** कामधेनु, शिवलिंग, बछड़ा, नन्दी, दण्डवत पुरुष, त्रिशूल और चमर।
- **ऐतिहासिक प्रमाण:** इन सिक्कों से बप्पा के कट्टर शैव मतानुयायी होने का पुख्ता प्रमाण मिलता है।

🛕 बप्पा रावल और एकलिंगजी — धार्मिक योगदान

- बप्पा रावल पाशुपत सम्प्रदाय के अनुयायी थे (हारीत ऋषि उनके गुरु थे)।
- उन्होंने पाशुपत सम्प्रदाय के प्रमुख देवता एकलिंगजी को अपना आराध्य देव स्वीकार किया।
- **कैलाशपुरी (उदयपुर)** में एकलिंगजी के भव्य मंदिर का निर्माण करवाया।
- बप्पा ने एकलिंगजी को मेवाड़ का वास्तविक शासक घोषित किया और स्वयं को एकलिंगजी का दीवान (प्रधानमंत्री) माना।
- तब से आज तक मेवाड़ के महाराणा स्वयं को एकलिंगजी का दीवान ही मानते हैं।

🔑 **परीक्षा बिंदु:** "मेवाड़ का वास्तविक शासक किसे माना जाता है?" — उत्तर: **एकलिंगजी** (बप्पा रावल की व्यवस्था के समय से)।

📍 बप्पा रावल — अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

देहावसान स्थान	नागदा
समाधि स्थल	एकलिंगजी (कैलाशपुरी) से 1 मील की दूरी पर
रावलपिंडी का नाम	माना जाता है कि बप्पा के सैन्य ठिकानों के कारण पाकिस्तान के शहर रावलपिंडी का नाम पड़ा
सी.वी. वैद्य द्वारा तुलना	**चार्ल्स मार्टेल** से (मुस्लिम सेनाओं को पराजित करने वाले फ्रांसीसी सेनापति)

❓ 'बप्पा रावल' — नाम या उपाधि? विवाद

विचारक/स्रोत	मत / विचार
डॉ. रामप्रसाद / श्यामलदास	'बप्पा रावल' किसी व्यक्ति का नाम न होकर एक उपाधि था।
नैणसी और टॉड	बप्पा रावल का मूल नाम कालभोज था; हारीत ऋषि ने 'बप्पा रावल' की उपाधि दी थी।
रणकपुर प्रशस्ति	इस प्रशस्ति में बप्पा रावल और कालभोज को दो अलग-अलग व्यक्ति बताया गया है।

💡 **परीक्षा ट्रिक:** "नाम = कालभोज; उपाधि = बप्पा रावल" — यही सर्वाधिक प्रचलित और स्वीकृत मत है।

🏛️ 5. बप्पा के उत्तराधिकारी — अल्लट तक

बप्पा के तात्कालिक उत्तराधिकारियों के बारे में प्रामाणिक सूचनाएं सीमित हैं। किंतु अल्लट (जिन्हें 'आलु-रावल' भी कहा जाता है) के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध है:

अल्लट के बारे में प्रमुख तथ्य

अंतर्राष्ट्रीय विवाह	हूण राजकुमारी हरियादेवी से (मेवाड़ का पहला अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक गठबंधन)
दूसरी राजधानी	**आहड़** को बनाया (इससे पूर्व केवल नागदा मुख्य राजधानी थी)
आहड़ का महत्व	उसे एक समृद्ध व्यावसायिक नगर और बड़ा व्यापारिक केंद्र बनाया
नौकरशाही (Bureaucracy)	माना जाता है कि अल्लट ने मेवाड़ में सर्वप्रथम संगठित नौकरशाही का गठन किया
मंदिर निर्माण	आहड़ में प्रसिद्ध **वराह मंदिर** का निर्माण करवाया

🌿 6. गुहिल वंश की दो प्रमुख शाखाएं — अत्यंत महत्वपूर्ण

गुहिल वंश में विक्रमसिंह के पुत्र रणसिंह (कर्णसिंह) के दो पुत्र हुए, जिनसे दो अलग-अलग शाखाओं का उद्भव हुआ:

रणसिंह (कर्णसिंह) ├── क्षेमसिंह ————→ रावल शाखा (मुख्य शाखा) │ (चित्तौड़ पर शासन → 1303 में समाप्त) └── राहप ————————→ राणा शाखा / सिसोदिया वंश (सीसोदा ग्राम से शुरुआत — जागीर)

रावल शाखा बनाम राणा/सिसोदिया शाखा

विवरण	रावल शाखा	राणा/सिसोदिया शाखा
संस्थापक	क्षेमसिंह	राहप (सीसोदा ग्राम)
शासन केंद्र	चित्तौड़ (मुख्य राजसत्ता)	सीसोदा ग्राम (प्रारंभिक जागीर)
उपाधि / नाम	रावल / गुहिल	महाराणा या राणा / सिसोदिया
ऐतिहासिक मोड़	1303 में अलाउद्दीन की विजय से समाप्त हुई।	1303 के बाद (हम्मीर के समय) मेवाड़ के शासक बने।

क्षेमसिंह के पुत्र और मेवाड़ का विवाद: क्षेमसिंह के दो पुत्र थे — **सामंतसिंह** (इनसे कीतू चौहान/कीर्तिपाल ने मेवाड़ का राज्य छीन लिया था) और **कुमारसिंह** (इन्होंने कालांतर में कीर्तिपाल को पराजित कर मेवाड़ पुनः प्राप्त किया)।

👑 7. जैत्रसिंह (1213–1253 ई.) — 'मध्यकालीन मेवाड़ का स्वर्णकाल'

कुमारसिंह के वंशज जैत्रसिंह गुहिल वंश के सबसे प्रतापी और वीर शासकों में से एक थे।

जैत्रसिंह की उपलब्धियाँ:

(i) सोनगरा चौहान उदयसिंह पर विजय: जैत्रसिंह ने पूर्वजों के अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए जालोर के सोनगरा चौहान उदयसिंह पर आक्रमण किया। पराजय निश्चित देखकर उदयसिंह ने अपनी पुत्री रूपादेवी (चचिकदेवी) का विवाह जैत्रसिंह के पुत्र तेजसिंह से कर संधि की।

(ii) इल्तुतमिश को परास्त करना (भूतला का युद्ध) — सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि:

आक्रमणकारी	दिल्ली सुल्तान इल्तुतमिश
आक्रमण का लक्ष्य	नागदा (मेवाड़ की तत्कालीन राजधानी)
संभावित तिथि	1222–1229 ई. के मध्य (भूतला का युद्ध)
परिणाम	जैत्रसिंह ने इल्तुतमिश को सफलतापूर्वक परास्त कर वापस खदेड़ दिया।
पुष्टि के स्रोत	आबू व चीरवा शिलालेख; जयसिंह सूरि रचित **'हम्मीर मद मर्दन'**
दुष्परिणाम	युद्ध के दौरान तुर्क सेना द्वारा नागदा को भारी क्षति → **राजधानी चित्तौड़ स्थानांतरित**

📌 **परीक्षा महत्वपूर्ण तथ्य:** जैत्रसिंह ने राजधानी नागदा से चित्तौड़ क्यों स्थानांतरित की? — क्योंकि इल्तुतमिश से युद्ध में नागदा पूरी तरह ध्वस्त हो गया था। कर्नल टॉड के अनुसार, 1231 ई. में नागौर के निकट भी इल्तुतमिश की सेना को परास्त किया गया था।

(iii) नासिरुद्दीन महमूद का आक्रमण (1248 ई.): दिल्ली के सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद ने लगभग 1248 ई. में मेवाड़ पर आक्रमण किया। फरिश्ता के अनुसार, सुल्तान का भाई जलालुद्दीन चित्तौड़ के आसपास छिप गया था, जिसे पकड़ने में सुल्तान असफल रहा और दिल्ली लौट गया।

📣 जैत्रसिंह पर इतिहासकारों के उद्गार

- **डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा:** "दिल्ली के गुलाम वंश के सुल्तानों के समय में मेवाड़ के राजाओं में सबसे प्रतापी और बलवान राजा जैत्रसिंह ही हुआ, जिसकी वीरता की प्रशंसा उसके विपक्षियों ने भी की है।"
- **डॉ. दशरथ शर्मा:** जैत्रसिंह के शासनकाल को **'मध्यकालीन मेवाड़ का स्वर्णकाल'** और 'मेवाड़ की नवशक्ति का संचारक' कहा है।

📝 Part 1 — विगत वर्षों के प्रश्न (PYQs)

Q1. मेवाड़ का प्राचीन नाम क्या था, जो वहाँ की प्रमुख जनजाति के नाम पर पड़ा?
उत्तर: **मेद्पाट** (मेर/मेद् जनजाति के आधिपत्य के कारण यह क्षेत्र मेद्पाट कहलाया)।

Q2. बप्पा रावल का वास्तविक/मूल नाम क्या था? (SI / Patwari)
उत्तर: **कालभोज** (नैणसी और टॉड दोनों के अनुसार मूल नाम कालभोज था)।

Q3. बप्पा रावल ने किस मौर्य शासक को पराजित कर चित्तौड़ पर अधिकार किया?
उत्तर: **मान मोरी** (734 ई. में पराजित किया था)।

Q4. गुहिल वंश की राणा शाखा (सिसोदिया) की स्थापना किसने की?
उत्तर: **राहप** (रणसिंह के पुत्र राहप ने सीसोदा ग्राम की स्थापना कर राणा शाखा की नींव डाली)।

Q5. आहड़ को मेवाड़ की दूसरी राजधानी किसने बनाया? (RPSC)
उत्तर: **अल्लट** (इन्होंने ही सर्वप्रथम नौकरशाही का गठन किया और वराह मंदिर बनवाया)।

Q6. जैत्रसिंह के शासनकाल को 'मध्यकालीन मेवाड़ का स्वर्णकाल' किसने कहा?
उत्तर: **डॉ. दशरथ शर्मा**।

Q7. नागदा से चित्तौड़ राजधानी परिवर्तन का मुख्य कारण क्या था?
उत्तर: इल्तुतमिश के आक्रमण (भूतला का युद्ध) के कारण नागदा को भारी क्षति पहुँची थी।

Q8. किस इतिहासकार ने बप्पा रावल की तुलना 'चार्ल्स मार्टेल' से की?
उत्तर: **सी. वी. वैद्य** ने।